श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनः चिकित्सा के प्रारूप का अध्ययन

मनोविज्ञान विषय में पी–एच0 डी0 उपाधि
की प्राप्ति हेतु प्रस्तुत

2005

विक्रम संवत् २०५८-५९

निर्देशक
परमश्रद्धेय डॉ0 प्रणव पण्ड्या
माननीय कुलाधिपति

प्रस्तुतकर्ता
गायत्री चौधरी
एम0 एस–सी0 मनोविज्ञान

मनोविज्ञान विभाग
देव संस्कृति विश्व विद्यालय
शांतिकुंज–गायत्रीकुंज हरिद्वार
(उत्तरांचल)

प्रस्तुत अध्ययन की उपयोगिता

बदलते परिवेश के अनरूप फ्रायड, डार्विन और मार्क्स के सिद्धान्तों के विकल्पों की तलाश आवश्यक है। आज की परिस्थिति और परिवेश में उन सिद्धान्तों की सामयिकता और उपयोगिता लगभग समाप्त हो चुकी है। नये विश्व-समाज में नये मानव के 'चेतनात्मक विकास' में कुछ ऐसे सिद्धान्तों की आवश्यकता है, जो हमें पशुता की ओर न मोड़ें, अपितु देवत्व और दिव्यत्व की ओर अग्रसर करें।

केन विलबर अपनी पुस्तक 'द स्पेक्ट्रम ऑफ कान्सीयसनेस' (Vo. 3, No. 2, P. 19) में लिखते हैं- "इस युग में व्यक्तित्व के विविध आयामों के विकास की प्रक्रिया अवरूद्ध पड़ गई है। मानवता आज आध्यात्मिक कुसमायोजन (Spiritual maladaptation) से पीड़ित हैं।" **एडविन अर्नाल्ड, क्रिस्टोफर, राल्फ वाल्डो, इमर्सन, पाल, डायसन, ई. डब्ल्यू हापकिंस** आदि पाश्चात्य विद्वानों ने अपने-अपने अध्ययन-अन्वेषण में पाया कि - व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं का प्रमुख कारण मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक समायोजन से अधिक मानसिक एवं जैविक स्तर पर इच्छाओं, वासनाओं के दमन की मानी गयीं। दमित वासना के पुरोधा फ्रायड ने अपने साइको इनेलेटिकल थ्योरी की इमारत बीमार मन की जमीन पर खड़ी की थी। जिसके प्रभाव से समाज में स्वास्थ्य की उन्नति के बदले और भी अधिक मनोरोगों की अभिवृद्धि हुई और देवत्व की ओर विकासोन्मुख मनुष्य पशुता की ओर बढ़ने लगा।

मारिया, हील गोसर्ड एवं रिचर्ड यार्क (2003) अपने शोधपत्र 'ह्यूमेन एण्ड इकोलॉजी' में लिखते हैं कि आधुनिक मनोविज्ञान समस्याओं के निदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। किन्तु इसकी उपचार की परिसीमायें सीमित हैं। दूसरे शब्दों में, मनोवैज्ञानिक खोजें अभी अविकसित स्थिति में हैं। इसके द्वारा 'मानवीय चेतना' के बाहरी और छिछले रूपों का ही अध्ययन बन सका है।

डॉ० एरिफ आर० रैमर्स, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की पत्रिका वर्ल्ड

हेल्थ के अप्रैल 2003 अंक में प्रकाशित अपने लेख 'स्प्रिचुअल लीडरशिप इन हेल्थ' में लिखते हैं कि "समस्त विकराल रोगों के समुचित, निरापद समाधान के लिये हमें पुनः भारत के चिर पुरातन आर्ष ग्रंथों का अनुसरण करना होगा।" ऐसा ही आर्षग्रन्थ जो आधुनिक मानव की वैयक्तिक चेतना में एक आधारभूत रूपांतरण कर ऐतिहासिक दुर्घटना से रोक सकता है, जिसका समूची मानव सभ्यता सामना करने जा रही है, वह है- श्रीमद्भगवद्गीता।

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन अपनी पुस्तक 'द भगवदगीता' में लिखते हैं कि इसमें समग्र व्यक्तित्व के निर्माण के लिए कर्म की सक्रियता एवं सुनियोजनता का एक शाश्वत संदेश दिया गया है। जहाँ मन की प्रतिकूलता की स्थिति ज्ञानातीत है। अकर्म का संतुलन मनोवैज्ञानिक समग्रता की स्थिति है। गीता के प्रमुख पात्र अर्जुन की तरह आधुनिक मानव निश्चय ही आंतरिक द्वंदों से उद्विग्न एवं अशान्त है तथा यह अन्तर्द्वन्द ही उसके समग्र मनोवैज्ञानिक जीवन की अपूर्णता का कारण है। यह वियोजन ही समस्त मनोरोगों का कारण है। श्री अरविन्द के शब्दों में गीता हर समस्या से संबंध व्यापक दृष्टि से रखती है। व्याख्यान के बाद अन्ततः अंतिम प्रवचन में अर्जुन महत् चेतना की इच्छा तथा अपनी वैयक्तिक महत्वाकांक्षा में परस्पर संबंध देखता है एवं प्रत्यक्ष बोध के द्वारा मानिसक अंतर्द्वन्द की समाप्ति की स्थिति तक पहुँच जाता है। इस तरह वह पूर्ण समग्रता को प्राप्त करता है। श्रीमद्भवद्गीता आधुनिक युग की समस्याओं के लिए त्वरित एवं प्रयोगात्मक मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। इस अथाह ज्ञान को अनुभूत करने तथा इसकी व्यावहारिक उपादेयता का आंकलन करने के लिये आज से ही नहीं अपितु पूर्ववर्ती आचार्यो-बोधायन, श्रीधर, मधुसूदन, आनंदगिरी आदि से लेकर स्वामी विवेकानंद, श्री अरविन्द, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, विनोबा भावे, डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भी अपने विचारों का प्रकाश इसी महासमुद्र से अर्जित किया।

प्रख्यात न्यूरोलॉजिस्ट मार्टिन रूथ चाइल्ड अपनी पुस्तक 'स्प्रिचुयैलिटी एवं इट्स साइंटिफिक डामेन्शन्स' में लिखते हैं "Spirituality is the Integral Science of the Future" अर्थात् अध्यात्म भविष्य का सम्पूर्ण विज्ञान है। उन्होंने

अपने एक शोध पत्र में कहा कि आध्यात्मिक जीवन शैली को अपनाने से लोगों को मानसिक रोगों की संभावना नहीं रहती। स्वामी अखिलानन्द के अनुसार जब तक व्यक्ति अध्यात्म के आदर्श को जीवन में धारण नहीं करता उसके मानसिक तनाव एवं कुण्ठाओं के स्थायी उपचार की कोई संभावना नहीं है। तब तक व्यक्ति के जीवन का चरम लक्ष्य भोगवाद, सुखवाद, मानसिक द्वन्द, तनाव और कुण्ठायें बनी रहेगी।

वर्तमान परिदृश्य में मनोचिकित्सा एवं अध्यात्म विद्या पुनः एक होने जा रहे हैं। सही रूप में मनोरोगों का सम्पूर्ण इलाज आध्यात्मिक तकनीकों के प्रयोग से ही सम्भव है। श्रीमद्भगवद् गीता में व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनः चिकित्सा के प्रारूप की संकल्पना एक महत्वपूर्ण कारक है इसी के अनुरूप व्यक्तित्व के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। आचार्य पं. **श्रीराम शर्मा** के शब्दों में मनुष्य का व्यक्तित्व भी अपने आप में एक छोटा विश्व है। इसकी भीतरी एवं बाहरी सत्ता में इतना कुछ विद्यमान है जिसके सहारे आज का दयनीय दुर्दशाग्रस्त जीव कल सर्वसमर्थ ब्रह्म बन सके परन्तु यह दिव्य वैभव प्रसुप्त पड़ा जिसे जान लेने पर विश्व की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियाँ करतलगत् होने लगेंगी।

शोध समस्या- (Research Problem)

" श्रीमद्भगवद् गीता में व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनः चिकित्सा का प्रारूप "इसके अन्तर्गत,

श्रीमद्भगवद् गीता में प्राप्त संकेतों के आधार पर व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनः चिकित्सा की खोज कर एक प्रारूप का निर्माण करना।

साहित्य सर्वेक्षण- (Literature review)

श्रीमद्भगवद् गीता में व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनः चिकित्सा का प्रारूप में अब तक कोई वैज्ञानिक शोध का सार्थक कार्य नहीं हुआ है। साहित्यिक पुनावलोकन में अब तक हुए कार्यो का विवरण -

* DILIBECK, M.C.(1994) The Bhagavad Gita : A case study in Maharishi's vedic psychology.Modern science and vedic science 4(2),96-97The author analyzes the Bhagavad Gita as a model case study from the vedic literature providing knowladge of the full range of "personality development" from ignorance to enlightment.

* ALEXANDER, C.N. (20001) Transcendentel Meditation in Encyclopedia of Psychology (2nd edi) R.J.casini PP-545-546 new york.

A scientific study of mind in reference to Bhagavad gita: The modern science deals with brain containing neuron and other cells and this brain is more like a storage hardware of a computer whereas the modern science neglect the real study of the mind which is like a computer software which operates on the brain and contains syntax and semantics of logics of feeling, thoughts, action, reaction.

शोध समस्या का औचित्य- (Justification of Research Problem)

प्रस्तुत शोध की उपयोगिता के विविध पहलुओं के विवेचन से इसके पूर्णतः मौलिक एवं औचित्य पूर्ण होने की संभावना बनती है।

इसमें समग्र मनः चिकित्सा का प्रारूप निर्मित किये जाने से मनः चिकित्सा के क्षेत्र में नवीन आयामों का विकास होगा।

शोध का उद्देश्य- (Objectives of Research)

मनुष्य स्वयं विचारशील, सजीव प्रयोग शाला है जिसमें अपरिमित विकास की सम्भावना है। प्रस्तावित शोध ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य

-आध्यात्मिक ग्रंथ मानी जाने वाली श्रीमद्भगवद् गीता में बतलाये गये गुण रहस्यों को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण विश्व के समक्ष उद्घाटित करना।

-व्यवहारिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से विकार युक्त, रूग्णों की समग्र मनः चिकित्सा के साथ-साथ मानवीय उच्चतम आयामों के विकास में प्रवेश।

-मानव निर्माण की एक समग्र मार्गदर्शिका के रूप में प्रस्तुत करना।

प्रस्तावित शोध कार्य की विधि-

श्रीमद्भगवद् गीता में व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनः चिकित्सा का प्रारूप प्रस्तुत किया जाएगा जिसके विश्लेषणात्मक समालोचनात्मक अध्ययन हेतु सैद्धांतिक रूप से मनोवैज्ञानिक विधियों एवं तकनीकों का वैज्ञानिक विवेचन किया जएगा।

-प्राचीन भारतीय एवं आधुनिक पाश्चात्य रचनाओं के साथ अन्य साहित्यक ग्रंथों/पत्र पत्रिकाओं को आधार बनाकर सामग्री का संचयन किया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद्भगवद् गीता : संवत् 2059, 214 संस्करण गीताप्रेस गोरखपुर।
2. आचार्य पं. श्रीराम शर्मा : संस्कृति संजीवनी श्रीमद्भागवत् एवं गीता वांगमय–31, युग निर्माण प्रेस मथुरा
3. Brannon, L. & Feist, J. (2000) : Abnormal psychology & modern life, published by Pearson edition, Singapore.
4. Radhakrishnan S. : The Bhagvad Gita, London George Allen and unwin ltd. pp 87
5. Martin Routh (2003): Spirituality and it's Scientific dimension publication London, thousand oaks, New Delhi, pp 46
6. Satyanand,D. (2000) : Dynamic Psychology of the Gita of Hinduism (Abridgeded.) Ddin university D.C.H. (London) pp 102
7. आचार्य पं० श्रीराम शर्मा : अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवीय व्यक्तित्त्व, वांगमय– 21

सहायक ग्रंथ सूची

1. Allen, P. (2000) : Personality theories, devcopment growth & diversity (3ed.) a peason education company 160 gould stress London.
2. Anjana, R. (2003) : Personality in Bhagavad Gita, Kerla University www.Psychilogy 4 all. com /fmnc. seminar
3. Carson, Butcher, Mineka (2000) : Abnormal Psychology &
4. Elkins,D.(1995) : Psychotherapy and spirituality toward a theory of the soul , journal of humanistic psychology ,78-79
5. Goel,B.S.(2000): Shrimad Bhagvad Gita (1ed.) published in india , march1986 ,third eye foundation of india,33new colony.kurukshetra (haryana)
6. Garg,R.S.(2003) : Gita for success in morden life(1ed)shri jainendra press A-5 naraina New Delhi.
7. Hurlock,B. Elizabetch(2002) : Personality development hill publishing company limited , New Delhi

8. Joseph,V.(2001) : The concept of personality in sri Aurobindo's intregral psychology and a marlow humanistic/ transpersonal psychology p.53
9. Lindzey, Jhon,B. (1997) : Theories of personality, published by library of congress cataloging.
10. Michel hersen : Encyclopedia of psychotherapy vol,2 1-z, academic press.
11. Revusky,S. (1999) : the psychology of learning and motivation(1ed.) academic press, vol-4 New York.
12. Venkoba ,A.(2003)_: Karma theory and psychiatry www.ijpoaline. org/ indijip, review art.htm.
13. William west(2002) : Psychotherapy and spirituality, crossing the line between therapy and religion , publication london, New Delhi, p45
14. Werner,K.(1998) : The vedic concept of human personality , vol,5 p275-289.
15. Yogananda sri sri (2002) : The Bhagvad Gita, royal science of god realization yagada satsanga society of India (1ed.) pp4,296.
16. आत्रेय शांति प्रकाश – योग मनोविज्ञान प्रथम संस्करण दि इंटरनेशनल पब्लिकेशन वाराणासी (1961)
17. आचार्य विनोबा भावे– स्थितप्रज्ञ दर्शन सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली (1949)
18. तिलक लोकमान्य बालगंगाधर –व्यक्ति और विचार विश्व प्रकाश गुप्त, राया पब्लिकेशन नई दिल्ली।
19. सिंह अरूण कुमार–व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, मोती लाल बनारसी दास, नई दिल्ली।
20. पेरी, एस, (2000)– व्यक्तित्व का विकास सफलता की कुंजी
21. विनोबा जी : गीता प्रवचन सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणासी संस्करण 50
22. श्री अरविंद : गीता विज्ञान– श्री अरविंद आश्रम पाण्डिचेरी

पत्र–पत्रिकाएं

1. "Shruti: vedic sciences , vijnana bharati, 8-13 aug2004, prasanti kutiram, banglor.
2. "World affairs : the journal of international issues, oct-dec2003.
3. "Spring(2002) : scholaraly and professional books , oxford uni. press.p89